Locke

Social Contract -

① ~~Locke~~ राज्य की उत्पत्ति के सन्दर्भ में "सामाजिक समझौता-सिद्धान्त" की परिकल्पना जॉन लॉक के राजनीतिक दर्शन का महत्वपूर्ण विषय है। वस्तुतः जॉन लॉक ने अपने सामाजिक संविदा सिद्धान्त के माध्यम से एक ऐसी शासन-व्यवस्था की स्थापना पर बल दिया है जिसमें जनसहमति प्रभावकारी ढंग से लागू हो और व्यक्ति की स्वतन्त्रता एवं सम्पत्ति की रक्षा भली-भाँति हो जाए।

हॉब्स की भाँति लॉक भी सामाजिक संविदा के विश्लेषण के पूर्व राजनीतिक सत्ता से रहित प्राकृतिक अवस्था का चित्रण करता है परन्तु लॉक का प्राकृतिक अवस्था हॉब्स की भाँति असहय नहीं थी, फिर भी प्राकृतिक अवस्था में लोगो को कुछ असुविधायें थी, जिससे उबकर लोगों ने आपस में एक समझौता सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। प्राकृतिक अवस्था में समाज का तो स्वरूप था लेकिन राजनीतिक संगठन नहीं थी लॉक ने विभिन्न चरणों में ~~[illegible]~~ ने भी कहा है. ~~[illegible]~~ समझौत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

चूंकि लॉक के राजनीति विचारों पर 1688 की इंग्लैण्ड की रक्तहीन क्रान्ति का ~~[illegible]~~ गहरा प्रभाव था अतः वह प्राकृतिक अवस्था का शान्तिपूर्ण एवं आनन्दमय चित्रण करता है। लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य प्रेम, शान्ति, सहयोग एवं सहिष्णुता की अवस्था में थी इसलिए हॉब्स के विपरीत ~~मनुष्य~~ लॉक की प्राकृतिक अवस्था

(2) प्रत्येक का प्रत्येक के साथ संघर्ष की अवस्था न होकर शांति, सम्पन्नता, सहयोग, समानता तथा स्वतंत्रता की अवस्था थी। लॉक के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में व्यक्तियों को प्राकृतिक अधिकार प्राप्त थे और प्रत्येक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के अधिकारों का ध्यान और आदर करता था। जीवन का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार तथा सम्पत्ति का अधिकार लॉक के अनुसार प्राकृतिक अधिकार थे। प्राकृतिक अवस्था में सम्पत्ति की सृष्टि ईश्वर प्रदत्त वस्तुओं में श्रम के सम्मिश्रण से हुई। अर्थात् जैसे पेड़ से फल इस प्रकार लॉक का मत है कि प्राकृतिक अवस्था में सभी व्यक्ति समान थे किन्तु यह समानता अधिकारों की समानता थी, शक्ति की नहीं।

इस प्रकार लॉक का मत है कि मनुष्यों को दूसरे के अधिकारों पर आक्रमण करने और हानि पहुँचाने से रोका जाना चाहिए सबको उस प्राकृतिक अवस्था को स्वीकार करना चाहिए क्योंकि ~~व्यक्ति~~ प्रत्येक व्यक्ति शांति और सम्पूर्ण मानवता की सुरक्षा चाहता है। लॉक ने कहा है कि तुम दूसरों के प्रति वही बर्ताव करो जिसकी तुम दूसरों से अपने प्रति आशा करते हो।

जीवन पर्यन्त
(Do unto other as you want other's
preposition (किसी हेतु करना)
to do unto you.)

लॉक का मत है कि प्राकृतिक अवस्था में कोई निश्चित कानून नहीं था, कानूनों को लागू करनेवाली

(3) कोई संस्था नहीं थी तथा यदि आपस में विवाद हो तो उस विवाद का निर्णय करनेवाली कोई न्यायपालिका नहीं थी। इस प्रकार कार्यपालिका, व्यवस्थापिका एवं विधि के अभाव में लोगों को असुविधा होने लगी। अतः इन असुविधाओं से ~~घबराकर~~ ऊबकर लोगों ने आपस में समझौता किया। चूंकि यह समझौता प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्येक व्यक्ति से था अतः इसके फलस्वरूप राजनीतिक समाज या ~~राज्य~~ राज्य का निर्माण हुआ इस समझौते के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति ने अपने उन अधिकारों का परित्याग किया जिसके कारण प्राकृतिक अवस्था में असुविधा होती थी। उदाहरण के लिए प्रत्येक व्यक्ति ने प्राकृतिक कानून की व्याख्या, उसे क्रियान्वयन एवं उसे भंग करने वालों को दण्ड देने के अपने अधिकारों का समुदाय के समक्ष सौंप दिया किन्तु इन अधिकारों के अतिरिक्त शेष सारे अधिकारों को व्यक्तियों ने अपने पास ही रख लिए।

इस तरह लॉक के अनुसार 'नागरिक समाज (civil society) का निर्माण 'अनुबन्ध' द्वारा सम्पन्न होता है। अनुबन्ध की संकल्पना एक बुर्जुवा संकल्पना (Bourgeois concept) है लॉक एक बार जब मानव समुदाय को अनुबन्ध से बाँध देता है तब इस बात की कोई सम्भावना नहीं रह जाती कि कोई अपने आप को अनुबन्ध से बाहर समझ सके।

मैकफर्सन ने लिखा है: लॉक यह स्वीकार करता है प्रत्येक मनुष्य - चाहे वह धनवान हो या निर्धन - 'नागरिक समाज' का सदस्य है

(v) लॉक के अनुसार नागरिक समाज की स्थापना समझौते के द्वारा की जाति जाती है, परन्तु सरकार की स्थापना 'विश्वास पर आधारित न्यास' (Fiduciary Trust) के द्वारा की जाती है।

लॉक के द्वारा प्रतिपादित समझौते सिद्धान्त की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ हैं :→

(i) लॉक के सामझौता सिद्धान्त की सर्वप्रथम विशेषता यह है कि यह है कि यह समझौता व्यक्तियों के स्वीकृति पर आधारित है। यह स्वीकृति मौन स्वीकृति है किन्तु सहमति का होना हर परिस्थिति में आवश्यक है क्योंकि नागरिक सता या राज्य का स्रोत जन इच्छा है।

(ii) यह समझौता अखण्ड होता है अर्थात् थानि एक बार समझौता हो जाने के बाद, इसे भंग नहीं किया जा सकता अर्थात् व्यक्ति कोई भी व्यक्ति वापस प्राकृतिक अवस्था में नहीं लौट सकता है।

(iii) यह एक ऐसा समझौता है जो प्रत्येक पीढ़ी को स्वीकार करना पड़ता है। यद्यपि लॉक यह स्वीकार करता है कि अपनी सहमति से कोई भी किसी राजनैतिक समुदाय का सदस्य हो सकता है। एवं प्रत्येक पीढ़ी अपने पूर्वजों की तरह किसी समाज एवं राज्य की अधीनता स्वीकार करने के लिए स्वतन्त्र है। किन्तु उसके अनुसार सामाजिक समझौता केवल एक बार होता है क्योंकि मनुष्य की भावी संतति अपने जन्म के देश की सरकार की सेवा को स्वीकार कर उस राज्य के प्रति अपनी मौन स्वीकृति देता है।

(iv) ~~इस समझौते के द्वारा सिर्फ प्राकृतिक अवस्था का अंत होता है~~, प्राकृतिक कानून ~~का~~ का नहीं।

(5) वह अपना अधिकार किसी एक व्यक्ति को नहीं बल्कि जन समुदाय को सौंपता है इस प्रकार लॉक द्वारा प्रतिपादित यह समझौता सीमित होता है क्योंकि मनुष्य अपने सभी अधिकारों का समर्पण नहीं करता है।

(v) इस समझौता के द्वारा सिर्फ प्राकृतिक अवस्था का अंत होता है, प्राकृतिक कानून का नहीं। मनुष्य राज्य में भी प्राकृतिक कानून के अधीन उसी प्रकार रहता है जिस प्रकार वह प्राकृतिक अवस्था में रहता था।

(vi) Sabine का मत है कि लॉक के अनुसार दो समझौते हुए। एक समझौते के आधार पर प्राकृतिक अवस्था — को समाप्त किया गया तथा राज्य की स्थापना हुई एवं दूसरे समझौते के द्वारा सरकार की स्थापना हुई। लॉक के अनुसार जहाँ प्रथम समझौता परस्पर व्यक्तियों में हुआ वहाँ दूसरा समझौता नागरिक समुदाय और सरकार के बीच हुआ परन्तु इस मत के विपरीत Barker ने कहा कि, लॉक के अनुसार सिर्फ एक ही समझौता हुआ, दो नहीं। इन दोनों मतों में दूसरा मत अधिक तर्क संगत प्रतीत होता है। इसके पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जा सकते हैं —

(क) लॉक का समझौता दोहरा नहीं है क्योंकि उसके अनुसार मनुष्य प्रकृति से ही सामाजिक होता है।

(ख) यदि लॉक स्पष्ट रूप से सरकार और नागरिक समुदाय के बीच समझौते को

(6) अस्वीकार नहीं करता ~~है~~ जैसा की सेबाइन ने स्वीकार किया है कि दो समझौते हुए। यह स्पष्ट नहीं है।

(v) लॉक ~~ने~~ यह पूर्णतः ~~स्पष्ट~~ स्पष्ट कर देता है कि समझौता सरकार के साथ नहीं हुआ, क्योंकि सरकार की उत्पत्ति तो समझौते के बाद हुई है। समझौते से सिर्फ नागरिक समाज की उत्पत्ति हुई। सरकार का नहीं।

(vi) लॉक का स्पष्ट मत है कि नागरिक समुदाय के लोग मिलकर एक ट्रस्ट बनाते हैं एवं सरकार का निर्माण ~~कुछ~~ विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए ट्रस्ट के रूप में होता है। जब तक सरकार को जनता का विश्वास प्राप्त होता है, तब तक वह बनी रहती है, पर ~~अगर~~ यदि जनता का विश्वास खो देने पे ~~वह~~ जनता उसे हटा सकती है एवं उसके ~~जगह~~ जगह दूसरे ट्रस्टी की स्थापना कर सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यदि सरकार निश्चित लक्ष्य की पूर्ति की दिशा में कार्य नहीं कर पाती है तो जनता को उसे पदच्युत करने का अधिकार प्राप्त है।

(vii) लॉक का सामाजिक समझौता एक दार्शनिक विचार होने के साथ-साथ ऐतिहासिक तथ्य भी है। लॉक रोम, वेनिस, स्पार्टा के उदाहरणों से इसकी ऐतिहासिकता को सिद्ध करता है। उसका यह विचार दार्शनिक इसलिए है क्योंकि उसने कहा है कि सभी मनुष्य प्राकृतिक अवस्था में तब तक रहते हैं, जब तक वे अपनी सहमति से राजनीतिक समाज का निर्माण नहीं कर लेते हैं।

(B) आलोचना :— लॉक के सामाजिक समझौते के सिद्धान्त की आलोचना विभिन्न प्रकार से की गई है -

(i) प्रो॰ गेटेल ने कहा है कि, "ऐसा प्रतीत होता है कि लॉक की प्राकृतिक अवस्था आधुनिक युग से भी अधिक नैतिक और शान्तमय थी। किन्तु यह कैसे सम्भव है कि आदिम मानव की प्राकृतिक अवस्था आज की अवस्था से अधिक नैतिक एवं शान्तमय होगी।"

(ii) लॉक व्यक्तिवादी था। अतः उसने व्यक्ति तथा उसकी सम्पत्ति के अधिकार पर बहुत अधिक जोर दिया जिससे राज्य का स्थान गौण पड़ जाता है।

(iii) कुछ आलोचकों का मत है कि लॉक ने सम्प्रभुता के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट विचार व्यक्त नहीं किया। सहमति के सिद्धान्त को उसने आवश्यकता से अधिक जोर दिया है तथा सम्प्रभुता को प्राकृतिक कानून से सम्बद्ध माना। उसके अनुसार उचित, अनुचित, न्याय, अन्याय का निर्णय व्यक्तियों की सहमति से होता है। लॉक के इस बात को यदि मान लिया जाए तो प्राकृतिक नियम भी मनुष्यों की सहमति पर आधारित होगा और राज्य की स्वतन्त्र सत्ता समाप्त हो जायेगी।

(iv) आलोचकों का मानना है कि जिन मनुष्यों ने प्राकृतिक अवस्था में जब कभी भी संगठित जीवन नहीं जीया तो एकाएक वो राज्य जैसे विशाल संगठन का निर्माण कैसे कर सकते हैं।

(8) अतः हम कह सकते हैं कि लॉक ने अपने सिद्धान्त में वैधानिक सम्प्रभुता सम्बन्धी सिद्धान्त की उपेक्षा की। Gilchrist का कथन है कि हमारी भाषा में हॉब्स राजनीतिक प्रभुसत्ता के अधिकार और अस्तित्व को स्वीकार कर वैधानिक प्रभुसत्ता के सिद्धान्त को व्यक्त किया किन्तु लॉक राजनीतिक प्रभुसत्ता पर जोर देता है पर वैधानिक प्रभुसत्ता को पर्याप्त मान्यता नहीं देता।

इन त्रुटियों के बावजूद लॉक के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। लॉक के सिद्धान्त ने केवल इंग्लैण्ड को ही प्रभावित नहीं किया बल्कि अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषणा, रूसो के माध्यम से फ्रांस की राज्य क्रान्ति को भी प्रभावित किया है। इतना ही नहीं 19 वीं शताब्दी में यूरोप में 20 वीं शताब्दी में एशिया एवं अफ्रीका में होने वाली समस्त राजनीतिक क्रान्तियों पर लॉक के (प्रभाव) विचार की स्पष्ट छाप है।

Marx ने ठीक ही कहा है कि "निर्माण करने वाला हाथ कहीं जेफर्सन का, कहीं गेम्बेटा का, कहीं वालपोल का था, किन्तु प्रेरणा निश्चयरूप से लॉक की थी।"

("The shaping hand was that of a walpole, a Jefferson, a gembetta or Cavour, the voice was invariably The voice of Locke.")